शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 2; जनवरी-जून, 2021; पृष्ठ संख्या : 88-92

खासी समाज : मातृसत्तात्मक या मातृवंशीय ?

✍ बेबी विश्वकर्मा

शोध-सार :

सत्ता की राजनीति जटिल है और इसका इतिहास उतना ही पुराना है जितना कि समाज का। समाज में व्यवस्था कायम रखने के लिए हो या फिर वर्चस्व की स्थापना के लिए, सत्ता की नीतियाँ रची जाती हैं और ये नीतियाँ एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग के नियंत्रण के आधार बनती हैं। लैंगिक परिप्रेक्ष्य में सत्ता की इस राजनीति ने स्त्री और पुरुष को दो वर्गों में बाँट दिया तथा पारंपरिक रूप से लैंगिक भूमिकाएँ तय कर दी गईं। हमारे देश की सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था मूलतः पितृसत्तात्मक है। परंतु भारत के उत्तर-पूर्व क्षेत्र के मेघालय में खासी जनजाति की महिलाओं को कुछ विशेष अधिकार प्राप्त हैं। लेकिन क्या खासी समाज वास्तव में मातृसत्तात्मक है ? इसका विश्लेषण प्रस्तुत करना इस शोधालेख का उद्देश्य है।

बीज शब्द : *मातृवंश, मातृसत्ता, खासी समाज ।*

1. प्रस्तावना :

अक्सर हम मातृसत्तात्मक समाज और मातृवंशीय समाज को एक ही मान लेने की गलती कर बैठते हैं। मातृवंशीय समाज में वंश माता से आगे बढ़ता है। वंशावली का पता भी माता के परिवार के माध्यम से चलता है। लेकिन इसके विपरीत मातृसत्तात्मक समाज की अवधारणा अधिक जटिल है। मातृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में सत्ता स्त्री के अधीन होती है, जहाँ पुरुषों की तुलना में स्त्री को विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं। सत्ता के सारे आयाम- सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, वैचारिक और व्यक्तिगत सभी क्षेत्रों पर स्त्री का प्रभुत्व स्वीकार किया जाता है।

2.विश्लेषण :

आधुनिक स्त्रीवादी विचारकों ने मातृसत्ता को एक कल्पना मात्र माना है। परंतु कुछ विद्वानों द्वारा यह मत प्रेषित किया गया है कि मातृसत्तात्मक समाज विकसित था। उन विद्वानों के अनुसार- जब व्यक्ति आदिम युग में था और परिवार व विवाह जैसी संस्थाओं का विकास नहीं हुआ था तथा व्यक्तिगत संपत्ति की प्रक्रिया भी शुरू नहीं हुई थी, तब संतान पर प्राथमिक अधिकार माता का होता था। महिलाओं के जीवन, रहन-सहन आदि पर पुरुष का अधिकार नहीं था। स्त्री की यौनिकता पर भी पुरुष का नियंत्रण नहीं था। वह अपनी इच्छानुसार कबीले के किसी भी पुरुष के साथ संबंध बनाने के लिए स्वतंत्र थी। इसी कारण संतान के पिता की पहचान कर पाना कठिन था। अतः संतान की पहचान माँ के आधार पर होती थी। मातृसत्तात्मक समाज के संदर्भ में फ़्रेडरिक एंगेल्स ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'ओरिजिन ऑफ फ़ैमिली, प्राइवेट प्रॉपर्टि एंड द स्टेट' में यह तर्क दिया था कि संपत्ति के उदय से पहले समाज मातृसत्तात्मक था। लेकिन शिकार और घुमक्कड़ी प्रवृति के क्षीण होने के कारण पितृसत्ता का उदय हुआ। उन्होंने कहा है-

> मातृसत्ता का विनाश नारी जाति की ऐसी पराजय थी जिससे पूरे विश्व के इतिहास पर प्रभाव पड़ा। अब घर के अंदर पुरुष ने अपना आधिपत्य जमा लिया। नारी पदच्युत कर दी गई।
>
> (सिंह 2017:84)

एंगेल्स के इस विश्लेषण के बाद भी नारीवादी विचारकों ने मातृसत्तात्मक समाज को कल्पना मात्र माना है। उनके अनुसार आदिम युग के उस चरण की समानता सभ्य समाज के साथ नहीं की जा सकती। उस काल में परिवार जैसी सामाजिक संस्था भी विकसित नहीं हुई थी। अतः मातृसत्तात्मक परिवार का विचार उपयुक्त नहीं है। परिवार और व्यक्तिगत संपत्ति के उदय के पश्चात् ही स्त्री को भी 'वस्तु' के रूप में देखा जाने लगा, परिवार में पुरुष का वर्चस्व स्थापित हुआ और स्त्री-दमन की प्रक्रिया प्रारंभ हुई।

फलस्वरूप मातृसत्तात्मक परिवार की अवधारणा ही विकसित नहीं हो पाई। इन विचारकों के अनुसार जिन समाजों में माता से उत्तराधिकार का निर्धारण किया जाता है, उन्हें मातृसत्तात्मक नहीं मातृवंशीय कहना अधिक उचित होगा; क्योंकि केवल पारिवारिक उत्तराधिकारी के रूप में बेटी महत्वपूर्ण होती है ; पर वह संपत्ति की संरक्षक मात्र होती है, अधिकारी नहीं। अन्य सभी राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक क्षेत्रों में पुरुष का वर्चस्व ही दृष्टिगोचर होता है।

भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के मेघालय राज्य में मातृवंशीय समाज का निदर्शन हमें प्राप्त होता है। मेघालय की खासी जनजाति मूलतः मातृवंशीय है। यहाँ वंश-परंपरा स्त्री-पूर्वज के आधार पर निश्चित होती है। खासी जनजाति में संपत्ति की अधिकारी स्त्री होती है। इस व्यवस्था के अनुसार परिवार की छोटी बेटी उत्तराधिकारी बनती है। परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि अन्य संतानें पूरी तरह वंचित रहेंगी। यदि परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी होती है, तो अन्य संतानों को भी संपत्ति में से कुछ हिस्से दे दिए जाते हैं। लेकिन अधिकतम हिस्सा छोटी बेटी के नाम होगा क्योंकि पारंपरिक रूप से वह पूर्वजों की संपत्ति की संरक्षक होती है। साथ ही अपने माता-पिता की मृत्यु तक सेवा करना उसका कर्तव्य माना गया है। परिवार की अन्य बेटियों को विवाह के पश्चात् मायके से निकलकर अपना-अलग परिवार गठन करना पड़ता है। लेकिन छोटी बेटी अपने पूर्वजों के घर में रहती है और सारे सामाजिक, धार्मिक नीति-नियम उसी घर में संपन्न होते हैं। पुत्री संतान के न होने पर बेटी गोद लेने की परंपरा भी है, ताकि वंश का विकास हो सके। खासी समुदाय के परिवार में एक माता-पिता, अविवाहित बच्चे, विवाहित छोटी बेटी और उसके पति रहते हैं। इस जनजाति में बेटियाँ ससुराल ब्याही नहीं जातीं, वरन् पुरुष को पत्नी के साथ रहना पड़ता है।

जहाँ विश्व के अधिकांश समाज पितृसत्तात्मक हैं,वहीं खासी समाज में मातृवंशीय परिवार जैसी अनोखी व्यवस्था का विकास किस प्रकार हुआ यह विद्वानों के अद्यायन का विषय रहा है। कतिपय विद्वानों का यह मानना है-

> एक समय ऐसा था जब खासी जनजाति के पुरुष समुदाय अधिकतर समय युद्ध में व्यस्त रहा करते थे, उनका जीवन सदैव दांव पर लगा रहता था। अतः अपनी पहचान और संपत्ति के संरक्षण हेतु उन्होंने उनकी ज़िम्मेदारी स्त्री समुदाय को सौंप दी।
>
> (Syiemlieh 1994:08)

खासी समुदाय में यह मान्यता है कि स्त्री परिवार का केंदुबिंदु है। अतः उसका रक्षणावेक्षण आवश्यक है। चूंकि खासी जनजाति में स्त्री के ऊपर पुरुष की शारीरिक वर्चस्वता को स्वीकारा गया है, अतः उसे स्त्री के रक्षक एवं प्रदाता की

पारंपरिक भूमिका सौंपी गयी है। इसीलिए खासी समुदाय में एक कहावत भी प्रचलित है- युद्ध और राजनीति पुरुषों के लिए, संपत्ति और संतान महिलाओं के लिए। खासी जनजाति में पारंपरिक रूप से निर्धारित ये लैंगिक भूमिकाएँ स्त्री के दमन और राजनीतिक क्षेत्र से स्त्री-निषेध के अन्यतम कारक के रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। खासी महिलाओं को पारंपरिक प्रशासनिक संस्थानों अथवा सभाओं में हिस्सा लेने का अधिकार नहीं है। यहाँ तक कि सार्वजनिक मुद्दों में अपनी राय व्यक्त करने की स्वतंत्रता भी उनके पास नहीं होती।

हालांकि संपत्ति का अधिकार परिवार की कनिष्ठ पुत्री को मिलने के कारण समाज में उसकी स्थिति महत्वपूर्ण मानी जाती है; लेकिन वह संपत्ति की संरक्षक मात्र है, अधिकारिणी नहीं। मामा अर्थात् माता के परिवार का बड़ा भाई छोटी बेटी के परिवार और संपत्ति के पारंपरिक अभिभावक के रूप में नियुक्त होता है। मामा की अनुमति के बिना संपत्ति बेचने पर रोक है। परिवार का मुखिया मामा ही रहता है। परिवार के सदस्यों में सर्वाधिक अधिकार उन्हें ही प्राप्त है। कुल की सभाओं का नेतृत्व भी वे ही करते हैं। पारंपरिक रूप से यह माना जाता है कि पारिवारिक अनुष्ठानों के सफल आयोजन की ज़िम्मेदारी स्त्री की है, लेकिन उनके आयोजन और रीति-रिवाजों का पालन करने हेतु मामा की सहायता और परामर्श अनिवार्य है। खासी जनजाति में यह मान्यता है कि पुरोहिताई पुरुषव्रत है। अतः परिवार के धार्मिक अनुष्ठानों में पुरोहित का दायित्व मामा ही निभाता है। गृहस्थी, जिसका केंद्रबिंदु स्त्री को माना गया है, वहाँ भी निर्णय लेने का अधिकार पुरुष को ही सौंपा गया है।

3.निष्कर्ष :

निष्कर्षतः यह कहना गलत नहीं होगा कि खासी समाज मातृसत्तात्मक न होकर मातृवंशीय है। संपत्ति के अधिकार मात्र से खासी महिलाओं को सत्ता प्राप्त नहीं होती है। उनका कार्यक्षेत्र इस समाज में भी प्रायः घर-परिवार तक ही सीमित है। निर्णय लेने की स्वतंत्रता उन्हें प्राप्त नहीं है, क्योंकि मूल निर्णयकर्ता इस समाज में भी पुरुष ही है। संभवतः यह कहा जा सकता है कि खासी समाज में वास्तविक सत्ता पितृ-परिवार के पुरुष के हाथ में न होकर मातृ-परिवार के पुरुष के साथ है।

ग्रंथ-सूची:

अंग्रेजी:

Nongbri, Tiplut. "Gender and the Khasi Family Structure:some implications of the Meghalaya Succession to self-acquired property Act-1984." Sociological Bulletin (1988)

Syiemlieh, P.B..The Khasis and Their Matrilineal System. Shilong, 1994.

हिंदी:

अनामिका.स्वाधीनता का स्त्री पक्ष.नई दिल्ली:राजकमल प्रकाशन, 2012.

सिंह, नमिता.स्त्री प्रश्न. नई दिल्ली:वाणी प्रकाशन, 2017.

संपर्क-सूत्र :

सहायक अध्यापक, नगाँव गर्ल्स कॉलेज

नगाँव, असम

ई-मेइल:biswakarmababy95@gmail.com